

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह (23-29 जून 2015)

यह राज्यों के कृषि वश्व विद्यालयों और उनके प्रतिनिधियों द्वारा भेजी गयी सूचनाओं के आधार पर आधारित

है।

मौसम की जानकारी:

राज्य / जिले	साप्ताहिक वर्षा रिकॉर्ड (मी.मी.)							साप्ताहिक सलाह
	23	24	25	26	27	28	29	
पंजाब								इस सप्ताह (20 से 24 जून) से दौरान अच्छी बारिश की संभावना व्यक्त की गयी है। जब क जून के अंतिम सप्ताह में घने बड़ी छाए रहेंगे और बूँदा बंदी होगी। जुलाई के पहले दो सप्ताह में अच्छी बारिश की भविष्यवाणी की गयी है। अतः खेतों में अभी कए जाने वाले सभी कृषि कार्य जैसे खाद डालना/ मलना , निराई , इत्यादि जून के अंतिम सप्ताह में पुजा करने की सलाह दी जाती है। थ्रप्स और सफेद मकखी की कई स्थानों पर सूचना मल रही है, पर कीटनाशक का छिदकव अभी न करें। अगस्त में बारिश से कीड़ों से राहत प्रदान करेगा।
भटिंडा		7	44	0	0	0		
फरोजपुर		12	48	7		0		
मुक्तसर		12	50	4		0		
मानसा		7	44	0	0	0		
हरियाणा								
सरसा		7	50	8	0	0		
हिसार		7	21	8	0	0		
फतेहाबाद		7	27	8	0	0		
राजस्थान								
हनुमानगढ़	1	5	15	3	2			
श्रीगंगानगर	1	5	15	3	2			
बांसवाड़ा	3	8	12	15	2			
उड़ीसा								
कोरापुट		0	5	8	5	9		
कालाहांडी		19	6	0	0	3		
बोलांगीर		28	9	0	0	0		
गुजरात								
अमरेली	12	100	90	22	0	0		
भावनगर	31	56	29	3	0	0		
जामनगर	1	200	174	56	0	0		
राजकोट	12	144	159	56	0	0		
भरुच	1	62	59	11	5	0		
सबरकांठा		0	57	50	47	11		
सुरेन्द्रनगर		68	159	56	0	0		
अहमदाबाद	2	26	66	39	0	0		
वडोदरा	2	83	83	26	35	5		
पाटन	4	11	100	41				
मेहसाना	1	5	57	52	20	0		
मध्य प्रदेश								
खरगोन	5	66	20	3	10	9	18	
धार	10	193	36	9	3	17	19	

इस सप्ताह लगातार बारिश की संभावना की जा रही है। इस दौरान बुवाई कार्य पूरा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जुलाई के दुसरे- तीसरे सप्ताह में बुवाई करने से अपेक्षाकृत कम बारिश की संभावना के कारण

खंडवा	10	61	3	4	5	17	16	फसल नमी तनाव (माइस्चज स्ट्रेस) हो सकता है अतः इस सप्ताह बुवाई की सलाह दी जाती है।	
महाराष्ट्र								इस सप्ताह के अंत में बादल छाए रहेंगे और बारिश से मुक्त होने की भव्यवाणी की है। यदि बुवाई पहले नहीं कया गया है तो यह बुवाई पूरा करने के लिए सबसे अच्छा समय है। जुलाई के पहले सप्ताह में भारी बारिश होने की उम्मीद कर रहे हैं, इस लिए 25-30 जून का समय खेतों सभी कृष कार्य (फील्ड अप्रेशन) के लिए सबसे अच्छा है	
नागपुर	15	11	3	0	0	0	0		
वर्धा	12	6	2	0	0	0	0		
चंद्रपुर	21	1	3	0	0	0	2		
यवतमाल	1	1	2	0	0	0	0		
अमरावती	25	12	4	2	5	4	2		
अकोला	22	10	3	0	0	0	0		
बुलढाणा			2	3	1	3	0		
परभनी	5	4	8	0	7	0	0		
नांदेड	12	2	7	0	9	0	0		
बीड	18	4	3	0	6	0	0		
वा सम	3	3	2	0	0	0	0		
धुले	0	4	5	10	20	17	15		वर्षा सं चत क्षेत्रों में तत्काल बुवाई आवश्यक है। इन क्षेत्रों में देर से बुवाई की गयी फसल में नमी तनाव का सामना करेंगे।
जलगांव	2	2	8	0	3	6	3		
जालना	8	3	7	0	0	0	3		
औरंगाबाद	4	5	6	10	13	11	15		
तेलंगाना								इस हफ्ते राज्य में बुवाई के लिए सबसे अच्छा समय है। आदिलाबाद में जुलाई के पहले दो हफ्तों में अच्छी बारिश की भव्यवाणी की गयी है। बाकी जिलों में बदली के साथ छिट पुट बूँदा बाँदी की भव्यवाणी की गयी है। आदिलाबाद के अलावा अन्य जिलों में 8 से 30 जुलाई के दौरान मध्यम बारिश की भव्यवाणी की गयी है। सभी वर्षा सं चत क्षेत्रों में बुवाई कार्य इस सप्ताह पूरा कया जाना चाहिए	
आदिलाबाद	1	3	5		4	0	0		
वारंगल	2	0	6		8	5	0		
खम्मन	3	4	5		0	0	0		
करीमनगर	3	0	5		0	0	0		
नालगोंडा	1	0	5		0	0	0		
आंध्रप्रदेश									
गुन्टूर	8	6	5		8	4	0		
प्रकासम	3	5	3		6	4	0	सं चत क्षेत्रों में बुवाई कार्य कर लेनेकी सलाह दी जाता है।	
कर्नाटक									
धारवाड़	4	12	15	9	7	6			
हवेली	3	12	6	5	6	5			
मैसूर								वर्षा सं चत क्षेत्रों बुवाई तुरंत लया जाना चाहिए एवं सं चत क्षेत्रों में बीटी-कपास संकर जितना जल्दी संभव हो सकता है बोया जाने की सलाह दी जाती है।	
त मलनाडू									
पेरमबेलूर	0	0	0	0	0	0			
सलेम	1	0	0	0	0	0			
त्रिची		0	0	0	0	0			
वरडुनगर	0	0	0	0	0	0			

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा लखत: इस सलाह का कोई हिस्सा कसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट या कस अन्यसाधन में कसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल कया जा सकता है।)

इस संक्षिप्त नोट में प्रबंधन रणनीति की सफारिशें सीआईसीआर कर गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और व भन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजेंसियों द्वारा कक सत पारिस्थिति के अनुरूप कक सत दिशा-निर्देशों के आधार पर कया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

1. जल्दी परिपक्व होने वाले या संकर-बीटी-कपास कस्मों को वर्षा संचत क्षेत्रों में प्राथमिकता दिया जा सकता है।
2. पहली बारिश(80 ममी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा संचत क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए।
3. वर्षा संचत क्षेत्रों में विशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण व ध में लकीरें (रिजेज) पर बुआई सबसे ज्यादा कया जाता है।
4. वर्षा संचत क्षेत्रों में जहां सचाई सुवधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90X30 सेमी दूरी पर अधिक चौड़ाई (व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।
5. गैर बीटी कस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-भी, परभणी), एकेएच 081 (डॉ पीडीकेवी अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंज ल (एलआरके516)जल्दी परिपक्वहोने वाली कस्में हैं यदि इन कस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60X10 (फुलेधन्वन्तरी के लिए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण कया जाता है तो सूखा तनाव और बोलवर्म के प्रकोप से फसल बच जाएगा।
6. गैर बीटी कपास की कस्मों की दो पंक्तियों के बीच एक पंक्ति में ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित लोबिया या सोयाबीन के बीज को 45 सेमी दूरी पर वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जा सकता है।
7. अंतर फसल (इंटर क्रो पंग) में सोयाबीन या लोबिया के बीज को ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित कर संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
8. कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की (2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लिए सहायक होगा और ये रिफ्यूजिया (refugia) के रूप में सेवा करते हैं।
9. पहली बारिश के बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन / हेक्टेयर की दर से खेतों में डाला जाना चाहिए।
10. एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फ़क्सेशन) के लिए इस्तेमाल कया जाना चाहिए।
11. क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उचित अभिव्यक्ति सुनिश्चित करने के लिए और पत्ता लाल रोग की समस्या को कम करने के लिए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लिए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधन क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उचित अभिव्यक्ति सुनिश्चित करने और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लिए $MgSO_4$ 2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। वल्ट के प्रारंभिक चरण में पौधों की रिकवरी के लिए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा 1% बावेस्टीन से तने के आस पास की मी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लिए मददगार पाया गया है।
12. पत्ता लाल रोग का निवारण: 90 दिन के फसल में 2% यूरिया, 0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. कलयों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लिए फनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मला कर स्प्रे करें।

कीटों एवं रस चूसक कीटों का प्रबंधन:

सामान्य सफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी कस्मों/संकरों का चयन करें। बीटी संकर कस्में कीट एवं रस चूसक कीटप्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर-क्राप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक/शकारी कीटों (प्रडेटर) की वृद्धि के प्रोत्साहन के लिए लगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लो फ्रड 8 ग्राम, वटावेक्स या थरम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (स कंग पेस्ट) और रोगों के खिलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लिए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील कस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकोंका उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मली बग संक्रमित पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नष्ट करें।
7. कम घटनकारी कीट प्रबंधन के लिए नीम से तैयार कीटनाशक और जैविक नियंत्रण विकल्प का उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँडी (पंक बोल वर्म) की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रेप का उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मरीड बग, मली बग और अन्य चूसक कीटों (स कंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लिए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेडाक्लो फ्रड डाइमैथोथेट या ए सफेट 30-40 डीएस और 50-60 डीएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लिए करें।

ये ना करें:

10. कपास में पूर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभाविक जैविक नियंत्रण के लिए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग ना करें।
12. कपास के पत्ता मरोड़क (लीफ फोल्डर) के नाबा लक और नगण्य लेप्टोटेरीन कीटों जैसे की साइलेप्टा डेरोगेटा एमोनिस फ्लेवा और से मलूपर के लिए कीटनाशक का छिड़काव न करें। इनके लार्वा से कपास की नगण्य नुकसान होता है। ये पैरा सतएड की लिए मेजबान के रूप में सेवा देता है। जैसे ट्राइकोडर्मा, एपेटेल्स और साइसीरोपा फार्मासा प्रजाति जो हेलोकोवर्पा आर्जिमेरा और अन्य बालवर्म पर हमला कर उनको नष्ट करता है।
13. चयन के दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी-योगों का स्प्रे न करें।
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइड कीटनाशकों का उपयोग करने से बचें जैसे क एसेटामी प्रड), ई मडाक्लो प्रड क्लो थए डन और थाईमैथोजेम , चूँक संकर कपास के बीज इमेडाक्लो प्रड से उपचरित होते हैं इस लिए कीटों में इनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न करें। अत्यंत खतरनाक श्रेणी के कीटनाशकों जैसे क फास्फे मडोन मथाइलपैरा थओन, फोरेटे, मोनोक्रोटोफॉस डाईक्लोवॉस कार्बोफुरान ट्राईजोफास और मेटासाइस्टोस।
16. फप्रोनिल और पाइरेथ्रोइड सफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई) के प्रकोप रोकने के लिए न करें।
17. कीटनाशक मश्रण का उपयोग बिलकुल ना करें कीटनाशक मश्रण से पारिस्थितिकी प्रणा लयों (इको- सस्टम) बाधत होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं। ये कीटनाशक लक्ष्य नाशिकीटों के लिए चयनित अति वर्षैले है जब क कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम वर्षैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त है।

गुलाबी सूँडी और चतिदार सूँडी : इनके लिए आर्थक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवत सूँडी मलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (कट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से या थायो डकार्ब 75 डब्लू पी का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

- 1) स्पोडोप्टेरा लटुरा: इस इल्ले के अण्ड पुंजों को हाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोडोप्टेरा लटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रो सस वायरस) का 500 एलई/ हे. की दर से या नोवाल्यूरोन 10 ईसी का 200 मली या थायो डकार्ब (ला र्वन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मला कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।
- 3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल कल) 12.5 क. गा. / हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें। मेंढों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैरा वल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभा वत पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 म. गा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभा वत पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 गा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बोडेजिम 1 गा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मी को तर करें।

गूलर सड़न:

साधारणतः प्रारम्भिक वक सत पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिम झम बारिसहोते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थैलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मली 100 लीटर पानी की दर से मलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी:

मैकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथे सयम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा:

स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 गा.हे.)+कापरआक्सीक्लोराइड (2000 गा.हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपतवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

घासों: क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्सिप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरो थियोबेक सो डायम का छिड़काव करें।

खरपतवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है।

जब खेत की मी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नैशाकनाशी विशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घासकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजईलोफोपइथाइल, फेनोक्सिप्रोप सो डायम, फ्लूयाजीफोप ब्यूटाइल का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबेक इथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लिए पायरीओथेबेक सो डायम कारगर है। अधिक जानकारी के लिए कृषि विशेषज्ञों से सलाह ले सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन:

कपास अतिरिक्त पानी के लिए बहुत संवेदनशील है। मध्य और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में अधिक बारिश कारण के पानी का जमाव होने से समस्याग्रस्त कया जा सकता है। गहरी काली मी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभावित है। भारी वर्षा की स्थिति में खेतों से पानी निकासी के लिए भूमि के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों या अतिरिक्त तरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें। उन क्षेत्रों में जहां वर्षा अधिकतम: 700-900 ममी हो वहां मी में बेहतर की नमी संरक्षण के लिए भूमि को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज) रिज हल की मदद से बनाएं। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज और फ्रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्त जल के लिए जल निकासी चैनलों की तरह कार्य करते हैं।

ड्रेनेज चैनल खेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए, जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं कया गया तो रिजेज और फ्रोज के शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लिए सफाई की है। यह मानना है कि रिजेज के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभावित नहीं करेगा क्योंकि रिजेज और फ्रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने के लिए उर्वरक छिड़काव स्थगित कया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधा पीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील यो गक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल में छिड़काव (फोलियर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मिलेगी।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रधान, केकअनुसं, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान, केकअनुसं, क्षेत्रीय केंद्र, सरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम वज्ञान वभाग (एआईसीएसटीआईपी केंद्र)

वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि वश्व वद्यालय, (पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ.पंकज राठौर	पंजाब कृषि वश्व वद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि वश्व वद्यालय, हिसार (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस.एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि वश्व वद्यालय, सरसा (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द कृषि वश्व वद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि वश्व वद्यालय, नवासारी (गुजरात)	9662532645	girishfaldy@rediffmail.com
डॉ. एम.डी.खानपारा	जूनागढ कृषि वश्व वद्यालय, जूनागढ (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरुद	महात्मा फुले कृषि वद्याहपीठ, रीठरी (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि वद्याहपीठ, अकोला (महाराष्ट्र)	9657725801	rsrcottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृषि वश्व वद्यालय, परभनी (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि वश्व वद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)	9406677601	aiccpkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उडीसा-कृषि एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, भुवनेश्वर- (उडीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस। भारती	आचार्य एन.जी. रंगा कृषि वश्व वधायल, नांदयाल (आंध्र प्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि वश्व वद्यालय, नांदयाल (आंध्र प्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादीक्की	धारवाड कृषि वश्व वधायल, धारवाड (कर्नाटक)	9448861040	yralakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि वश्व वद्यालय, रायचूर- (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

नोट: कीटनाशककी मात्रा, खेतों के क्षेत्रफल या कसी अन्य जानकारी में यदि कोई संशय हो तो इसके अंग्रेजी संस्करण से संशय समाधान अवश्य करें।

हिन्दी संस्करण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

-इति-